

भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही ।

## ग्रन्थ ज्ञान मूल

साखी - ९

सत वर्ग सर्व ऊपरे, सखा पत्र सब जीव ।

जल थल सब में व्यापिया, साच सुधारस पीव ॥

चौपाई

आदि अन्त के ऊपर मूला । डार पात बिबिधि जग फूला । १ ।

अक्षय वृक्ष क्षय होत न कबहीं। सार शब्द कहत हौं अबहीं।२।

आदि भवानी में दनी माया । वाके बीच सबो गुण गाया ।३।

यह धरणी कवि केते भैऊ । आदि अन्त के पार न कहेऊ ।४।

भेष अलेखा भक्त वैरागी । त्रिगुण गुण में सब केहु जागी ॥५॥

वार कहे फेरि पार बखाना । है वह ब्रह्म अलेप अमाना ।६।

शक्ति माया है सबके पासा । भोजन भाव औ नींदहिं ग्रासा । ७ ।

वोए ब्रह्म अखण्ड खण्डित नहिं कहई । सो जिन्दा जग जागृत अहई । ८ ।

उनके कबहिं शक्ति नहिं साथा । जो जन सुमिरहिं होहिं सनाथा । ६ ।

वोए योनि संकट कबहिं नहिं आवे । यह भेद बिरला जन पोवे । १० ।

साखी - २

वोए साहब अतीत अपार हैं, त्रिगुण गुण के पार।

उपजि विनसि रहि जात सब, वोए तो रंग करार ॥

चौपाई

राज रोग भोग सब माँगा । नीच ऊँच शक्ति सूखा पागा । ११ ।

नृप मन्दिर में यह सुख भैऊ । अन्तकाल दुःख दारुण पैऊ । १२ ।

झूठ मीठ साँच गूण तीता । वृद्ध भै व्याधि तन कीता । १३ ।

सतगुरु मत अन्त के कामा । तन छूटे पहुँचे निजु धामा ॥१४॥

करि बिलास पृहप की खानी । पृहप वेमान रस अमृत सानी । १५ ।

कहेउ विवेक विचारह ज्ञानी । सार शब्द है अमृत बानी । १६ ।

छप लोक शहर गूलजारा । साहब बचन मैं कीन्ह विचारा । १७ ।

है यह साँच झूठ जनि जाने । झूठ बड़ो तेहिं यम धरि ताने । १८ ।

छपलोक से मम चलि अएऊ । पीछे साहब दर्शन मोहिं दियऊ ॥९६॥

जिन्दा रूप गण गहिर गंभीरा । दयावंत निर्मल गण थीरा । २० ।

| सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम  | सतनाम |
|-------|--|-------|--|-------|--|-------|
| सतनाम | प्रेम सुधारस बोलहिं बानी। लागि झरि अमृत रस सानी।२१।        | सतनाम | हमसे खुल बचन इमि कहेऊ। शहजादा निर्मल गुण गैअऊ।२२।          | सतनाम | साखी - ३   | सतनाम |
| सतनाम | छपलोक है शहर हमारा, जम्बु दीप पगु ढारि।                    | सतनाम | तुम कारण यहाँ आइया, बोले बचन बिचारि॥                       | सतनाम | चौपाई  | सतनाम |
| सतनाम | छोड़ा तखत दोलैचा सेज्या। करन आये सुकृत की रक्षा।२३।        | सतनाम | प्रथम सीलिमिल दीप में ऐऊ। भक्ति भाव मेरो गुण गैऊ।२४।       | सतनाम | कहे सब साँच झूठ नहिं बाता। बहुत सुगन्ध प्रेम रस माता।२५। | सतनाम |
| सतनाम | ऐसन देरा दीप कर भाऊ। बिबिधि आनन्द हंस गुण गाऊ।२६।          | सतनाम | दीप दीप सब देखा जाई। चले अदल जहाँ हंस पेठाई।२७।            | सतनाम | तुम्हरी सनद सभै गुण गावे। एहि छापा दूजा नहिं भावे।२८।    | सतनाम |
| सतनाम | प्रकट नाहिं गूँगा तहाँ रहेऊ। हंसन्हि देखि बहुत सुख पैऊ।२९। | सतनाम | गुप्त भाव हंसन्हि कह देखा। फेरि सूरति आगे के पेखा।३०।      | सतनाम | जम्बु दीप कह देखा आई। मन मोआस कछु कहा न जाई।३१।          | सतनाम |
| सतनाम | साखी - ४   | सतनाम | घर घर साहब होय के, बहु विधि महल बनाय।                      | सतनाम | भक्ति भाव नहिं देखिये, वेश्या को गुण गाय॥                | सतनाम |
| सतनाम | चौपाई  | सतनाम | कहे राम फेरि धरि के मारे। मीन मांस ले मुख में डारे।३२।     | सतनाम | आतम राम सब संसृत अहई। जीवन बन्धन यह निशि दिन दहई।३३।     | सतनाम |
| सतनाम | देवता दैत्य नाहिं बिलगाना। अमृत विष एक सँग साना।३४।        | सतनाम | हमको कहा कवन को जाना। राय निरंजन वेद बखाना।३५।             | सतनाम | पण्डित मूर्ख एक सम भैऊ। जीव के घात पाप सिर लैऊ।३६।       | सतनाम |
| सतनाम | वेद पढ़ा पर भेद न जाना। भेद सतगुरु संग रहा अमाना।३७।       | सतनाम | इमि करि चलि तुम्हारे पह ऐऊ। बहुत धक्का तुम तन में सहेऊ।३८। | सतनाम | अकूफ दीन्ह तुमके बहु भाँती। राखि करो देखो दिन राती।३९।   | सतनाम |
| सतनाम | निमेरा करि निगम साधा। गढ़ि मोआस सबन्हि कह बाँधा।४०।        | सतनाम | अस्सी हजार फौज चलि आई। गढ़ि ढहाय सब गर्द मिलाई।४१।         | सतनाम |  | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम  | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - ५   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कारन किन्हो तुम से, ग्रीद परा चहुँ घेरि॥                     |       | सतनाम |       |
|       |       |       | बांन बुन्द छाटा हुआ, कहा बचन तुम टेरे॥                       |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तख्त बैठाय यहाँ तुम्हें राखा। चलिहें पन्थ तुम्हारे शाखा।४२।  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अहे अगम तुम जीव के राखो। एहि बचव आगे निजु भाखो।४३।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | छपलोक जहाँ हंस विराजे। छत्र मनोहर सब सिर छाजे।४४।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अमृत झरि मेवा बहु भाँति। लागी झरि बर्षे चहुं पाँती।४५।       |       |       |       |
| सतनाम |       |       | वहाँ किसान खेती नहिं करई। भरि भरि पीवे सदा सुख लहई।४६।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | हृद पर अधरस देहु दिखाई। आधा लोक काश्मीर कहाई।४७।             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अहे मेवा की बहु विधि खानी। अहे सुगन्ध फूल गुलाब बखानी।४८।    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | बारह कोस शहर के भाऊ। भला है लोग साँच सब कहेऊ।४९।             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | बहुत गुलाब अत्र तहाँ भयऊ। अति सुगन्ध साधु गुण लहेऊ।५०।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | जन्म भया फिरि मरि मरि गयऊ। कच्चा पिन्ड अमर नहिं रहेऊ।५१।     |       |       |       |
|       |       |       | साखी - ६   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अवनि अमर दोलइचा कहिये, बिनसि कबहिं नहिं जाय।                 |       | सतनाम |       |
|       |       |       | जो आया सो खपि गया, बहुरि जन्म फिरि पाय॥                      |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अपनी सिकिलि सब जीव बनाया। अधरस भेद तुम्हें समुझाया।५२।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | हम अडोल डगमग नहिं भयऊ। केता युग कल्प बिति गयऊ।५३।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | आदमी नायब उलटि के पेखो। अविगति अगम तहाँ यह देखो।५४।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | बाहर भीतर झरि अमर अनूपा। पूछे बोले रहे यह चूपा।५५।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अगम निगम भेद कहि दियेऊ। गूँगा होय अमृत रस पियेऊ।५६।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | खाली बात बके जनी एता। पूछे बोले प्रेम निजु हेता।५७।          |       |       |       |
| सतनाम |       |       | डोले जग में जहाँ तहाँ जाई। अकुफ हमार कहे समुझाई।५८।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चुनि चुनि हंसा लेत निकारी। काल कुबुद्धि है दूरि करि डारि।५९। |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तुमसे भेद कहा सब नीका। विमल विरोग ज्ञान का टीका।६०।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | तुमके चिन्ही शब्द पहिचाने। अमर लोक पयाना ठाने।६१।            |       |       |       |
|       |       |       | 3  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|---|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - ७  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | भव जल में सब काग हैं, औ बक बाउर अन्ध।                         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | मीन मांस कह खात हैं, ढूँढ़त वाको गन्ध॥                        |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साहब आय अगम होय गयऊ। कहाँ वह जाही हृदय महाँ रहेऊ।६२।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दुई शहजादा अहे हमारा। चलो विचार ज्ञान उपकारा।६३।              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | चंचल मन यह थिर करि लीजै। गुप्त भाव अमी रस पीजै।६४।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | रहनि गहनि है शब्द अमोला। बैन विचारि हंस सो बोला।६५।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जीवन मरन है या तन खोहा। करो प्रेम सतगुरु से नेहा।६६।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | हाल हजूरी कहि समुझाया। अझुरन झेल ताहि सझुराया।६७।             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | हुकुम बिसारे सो कम जाती। हुकुम जोगावे दिन और राती।६८।         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | बिना हुकुम पगु कतहीं न दीजै। कोर्निस किजै प्रेम नहिं छीजै।६९। |       |       |       |
| सतनाम |       |       | हंस दशा गुण श्वेत सुहावे। श्वेते अमर दूजा नहिं भावे।७०।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | गुण गंभीर गुण सब मति थीरा। नैन झलके मनि जनु हीरा।७१।          |       |       |       |
|       |       |       | साखी - ८  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | पटतर दीन्हों मणि के, मणि बरोबर नाहिं।                         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | माँजे मकुर साफ दोउ दीदम, मम पकड़ो तुम बाहिं॥                  |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | बाह बोल सतगुरु कनहरिया। खेई उतारेओं कहर है दरिया।७२।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दरिया वारे पारे अहई। दरिया बीच जगत् इह अहई।७३।                |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दरिया में लाल जवाहिर अहई। मरिजीवा जो बुड़ि के गहई।७४।         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | लेइ निकारि बाहर फिर देखा। धन्य धन्य सबन्हि मिलि पेखा।७५।      |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दरिया नाम साहब का अहई। बेशुमार कथा किमि कहई।७६।               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दरिआ मम दास कहाई। वृगासा कमल अमृत रस पाई।७७।                  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | भीतर हंस वंश यह लहेऊ। बाहर नाम सबे कोई कहेऊ।७८।               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | बहु विधि बासन गढ़े कुम्हारा। ठोंकि ठाकि बाहर कै डारा।७९।      |       |       |       |
| सतनाम |       |       | धाये नर सब मोल मँगाये। कहीं सुगन्ध वासना नाये।८०।             |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कहीं रस गोरस भरि लीन्हा। तामे दधि घृत जो कीन्हा।८१।           |       |       |       |
|       |       |       | 4   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - ६   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कहिं कंचन मानिक भरा, कहिं तामा है रूप।                       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चीकन चाम बनाइया, राव रंक औ भूप॥                              |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कहीं मदपी मदिरा भरि लीन्हा। सोई वोये वासना कीन्हा।८२।        |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कसाई कर्म रुधिर भरि कियेऊ। चमर कार मांस रिंधि दियेऊ।८३।      |       |       |       |
|       |       |       | ऐसे तन रचा बहु भाँती। भीतर काग सुकर की जाती।८४।              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कहीं मोती मणि माणिक छाया। कहीं रोर यह शोर लगाया।८५।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | तीन सौ साठि बन्धन तेहिं लागा। तामें हंस कहिं भौ कागा।८६।     |       |       |       |
|       |       |       | एहि विधि भर्महि भव में जाई। चारि चरण दुई सींग बनाई।८७।       |       |       |       |
| सतनाम |       |       | योनि संकट में फिरि फिरि आवे। साधु संगति कतहीं नहिं पावे।८८।  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | पशुवत ज्ञान ताहि धरि बाँधे। आँखि छपाय कोल्हू में नाधे।८९।    |       |       |       |
|       |       |       | कहीं रहट में गिर्द फिरावे। कहीं बनिया बहु बोझ धरावे।९०।      |       |       |       |
| सतनाम |       |       | परा चकोह चाक ज्यों धूमा। भेड़ि बाध कहिं भौ गौ दूमा।९१।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | साखी - १०  |       |       |       |
|       |       |       | काहा कर खीचिया, बोझ बड़ा घर दूर।                             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तबहीं कस ना सँभारिया, जब ग्रहण ग्रासेवो सूर॥                 |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | शहजादा मम कहा विचारी। चलो पन्थ ज्ञान निरुवारी।९२।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दफा समेत भक्ति निजु हेता। ज्ञान सनीप प्रेम निजु एता।९३।      |       |       |       |
|       |       |       | अपने बोध आन कह बोधे। करि दिव्य दृष्टि गगन में सोधे।९४।       |       |       |       |
| सतनाम |       |       | छुछुम छेमा होय प्रमीना। झमि करि साधु जगत में वीना।९५।        |       | सतनाम |       |
|       |       |       | खग औ मीन चंचल है भाऊ। चंचल लोचन चहुँ दिशि धाऊ।९६।            |       |       |       |
|       |       |       | दृष्टि भीतर तब दृष्टि समावे। लागी झरि अमृत रस पावे।९७।       |       |       |       |
| सतनाम |       |       | झमि करि हंस होय उजियारा। ममता मद सबे मेटि डारा।९८।           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | साँच गोसइयांहिं कछु नहीं बीचा। अमी प्रेम रस तजि दे मीचा।९९।  |       |       |       |
|       |       |       | लघु बहु बचन बेकारा अहई। टूटि गौ हार गाँथन फेरि चहई।१००।      |       |       |       |
| सतनाम |       |       | प्रेम धागा गहि निर्मल गाँथो। काम क्रोध कहँ झमि करि नाथो।१०१। |       | सतनाम |       |
|       |       |       | क्षमा सांगि दृढ़ ज्ञान हमारा। तुमसे कहों मम बारम बारा।१०२।   |       |       |       |
|       |       |       | 5  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|---|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - ११   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | शहजादा सुनि लीजिये, हंस वंश सुख राज।                            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | ज्ञान विरह यह दीजिये, कबहीं न होत अकाज॥                         |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | शाह फकर औ बस्ती दासा। तुमसे कीन्ह ज्ञान प्रकाशा।१०३।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | निरंकार अंकार न अहई। सगुण विनसि गुण किमि कर कहई।१०४।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | सर्गुण गुण है निर्गुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१०५।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अक्षय अशोग राग नहिं रोगा। विमल विरोग ताप नहिं सोगा।१०६।         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | एक त्यागे एक संग्रह नीका। शक्ति के संग रंग यह फीका।१०७।         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | मीच नीच चाखो मरि गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१०८।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१०९।           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | वेवहा नाम है अजर अमाना। को कवि कहे भेद को जाना।११०।             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | महि मण्डल औ शशि है सूरा। जगत् ईश छवि है भरि पूरा।१११।           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चारि करि गुण योग बखाना। पंचयेँ अविगति पुर्खा अमाना।११२।         |       |       |       |
|       |       |       | साखी - १२   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन।                      |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य॥                          |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | पाप करे दुःख दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।११३।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।११४।     |       |       |       |
| सतनाम |       |       | चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।११५। |       | सतनाम |       |
|       |       |       | बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।११६।              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | द्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।११७।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भक्ति न जाना।११८।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।११९।               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अजहूँ चेत चेतनि चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०।              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।         |       |       |       |
|       |       |       | 6   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - १३  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साधु भोजन नहिं भवन में, नहिं सतगुरु से प्रीत।                  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | भागर को जल अचवन, बारुण चाहत निति॥                              |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | लाल रतन गरकाब कबीरा। पूर्ण ब्रह्म गुन गहिर गंभीरा।१२३।         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | धर्म दास हंस उजियारा। नीर क्षीर विवरण करि डारा।१२४।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दुई भाग क्षीर यह कहई। एक भाग जल भीतर रहई।१२५।                  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | क्षीर से नीर इमी लीन्ह निकारी। बिलगि भयो सब बुद्धि बेकारी।१२६। |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दरिया दिल सब कोई इह अहई। दर्पण दर्श सदा सुख लहई।१२७।           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | वारे पारे देखु विचारी। वारिधि बारी गुण है अधिकारी।१२८।         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | बिना जहाज किमि होखे पारा। बेवाहा नाम गुण घैचनिहारा।१२९।        |       | सतनाम |       |
|       |       |       | खारों दरिया जल थल अहई। दीप दीप गुण प्रकट कहई।१३०।              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | उड़िगन गगन रहे विस्तारा। गनि नहिं सके वेद अधिकारा।१३१।         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | सार शब्द गहो बहु भाँती। अनन्त कला सब जाति अजाती।१३२।           |       |       |       |
|       |       |       | साखी - १४  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | बालापन ते साहब भजे, जग से रहे उदास।                            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | नाम देव चन्दन भये, शीतल शब्द निवास॥                            |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जहाँ तहाँ मैं देखा विचारी। त्यागे न भोग भाग सुख नारी।१३३।      |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अब अब कहत गया दिन सारा। भूले गर्बे मूढ़ गँवारा।१३४।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दुई शहजादा मम गृह रहेऊ। भैं चेतनि चित्त गुण इमि कहेऊ।१३५।      |       | सतनाम |       |
|       |       |       | सीरे दफा ताहि कहँ भाषा। ज्ञान विचारि एक मत राखा।१३६।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | शाह फकर फरजन्द हमारा। भै दास गुण ज्ञान विचारा।१३७।             |       | सतनाम |       |
|       |       |       | लघु औ दृग दोनों है भाई। समुझि ज्ञान गुण कहा बुझाई।१३८।         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | बस्ति शाह छोटा इह कहई। छापा सनदि मूल सो गहई।१३९।               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दफा हमार सबे सिर नावे। अदब अदाब भक्ति गुण गावे।१४०।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तेहि परवाना हुकुँम जो दीन्हा। लिखा हमार होय नहिं भीना।१४१।     |       | सतनाम |       |
|       |       |       | छापा सनदि ज्ञान परवाना। करे भक्ति सब सन्त सुजाना।१४२।          |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - १५  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दोये शहजादा जानि के, लिखि दिया हम साँच।                    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | आगे पीछे जो करे, सोई बचन है काँच॥                          |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साँच न मिटे झूठ मिटि जाई। वेवाहा यह अदल चलाई।१४३।          |       | सतनाम |       |
|       |       |       | देखा मम सभ दृष्टि पसारी। माया प्रिय बन्धु सुत नारी।१४४।    |       |       |       |
|       |       |       | यह फकीर आगे सब भौऊ। थै थपना यह इमि कर कियेऊ।१४५।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जाकर हद बेहद असमाना। वाको जीव सब सकल जहाना।१४६।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | तिनही अकूफ दिया हमें आई। दर्शन देखि अमृत फल पाई।१४७।       |       |       |       |
|       |       |       | तिनहीं तखत बखत यह दियेऊ। दयावन्त दया बहु कियेऊ।१४८।        |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अन्न कपड़ा का वकसिस कीन्हा। दफा तुम्हार न होय भलीन्हा।१४९। |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दुःख सुख में सुमिरे सब नीका। अवरि बात जाने सब फीका।१५०।    |       |       |       |
|       |       |       | निन्दा स्तुति जो कोई करई। धोबी धोए मैल नहिं रहई।१५१।       |       |       |       |
| सतनाम |       |       | गाँव ठाँव की कवन बड़ाई। हमके छोड़ि कहाँ फिरि जाई।१५२।      |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कुल कुटुम्ब बन्धु परिवारा। करे भक्ति सोई निजु सारा।१५३।    |       |       |       |
|       |       |       | साखी - १६  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कुल कुटुम्ब सब निन्दहिं, निन्दहिं यह संसार।                |       | सतनाम |       |
|       |       |       | शब्द हमारा जनि छोड़ो, उतरहु भव जल पार॥                     |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | लिखा हमार लागे जनि तीता। जाके भक्ति सोई जन हीता।१५४।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | दाख छोड़ि सुगना उड़ि गैऊ। मास बिते यहवाँ चलि ऐऊ।१५५।       |       |       |       |
|       |       |       | अब सुगना तुम करहु उपासा। बहुरि गयो सेमर के पासा।१५६।       |       |       |       |
| सतनाम |       |       | चोंच के मारे भुवा उड़ि गैऊ। मुर्छि परा तावरि तन ऐऊ।१५७।    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | लाल फूल विश्वास लोभैऊ। उड़ि गई माया भवन नहिं रहेऊ।१५८।     |       |       |       |
|       |       |       | सो धन चोर हाकिम ने लीन्हा। लागी आगि भसम करि दीन्हा।१५९।    |       |       |       |
| सतनाम |       |       | देह तेरी नहिं माया तेरी। ई नहिं बसि भई काहु केरी।१६०।      |       | सतनाम |       |
|       |       |       | खरचहु खाहु सतगुरु की सेवा। महल में टहल पावे निजु मेवा।१६१। |       |       |       |
|       |       |       | मरि जब गया पीछे पछतावे। फेरि नहिं बहुरि माया में आवे।१६२।  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | भर्मित फिरे भवन में केता। चरि चरण धरि पशु होए प्रेता।१६३।  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | 8  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |



| सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|---|---|-------|-------|-------|
|       |       |   | साखी - १७   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | गुरु कह सरबस दीजिये, तन मन अर्पो शीश।                     | गुरु बहियां गुरुदेव हैं, गुरु साहब जगदीश॥                 | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|       |       | चौपाई   |   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सोई गुरु ज्ञान जो नर्क उबारे। तरनि घैंचि पार ले डारे।१६४। | जब प्रसाद सूरति महँ आवे। बहु भातिन्ह इह युक्ति बनावे।१६५। | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | शकर सोहारी औ दधि मेवा। भक्ति भाव से लावै सेवा।१६६।        | तापर कपड़ा श्वेत वोहारी। पाणि जोरि के विनय हमारी।१६७।     | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | शहजादा के आगे धरई। बहु विधि आनन्द मंगल करई।१६८।           | होये बरकती बास सुबासा। साहब घ्राणि लेहिं चहुँ पासा।१६९।   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | भाव भक्ति यह यहि विधि करई। हंस दशा गुण निर्मल रहई।१७०।    | वर्ष रोज में यह गुण नीका। साहब कहा भक्ति का टीका।१७१।     | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | तन मन धन साहब का अहई। जीवन थोर गुण शब्दहिं गहई।१७२।       | सो हंसा छपलोके जावे। बहुरि न भवजल धक्का खावे।१७३।         | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|       |       | साखी - १८   |   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सोई हंस गुण सार है, जिन्हि मानहिं कहा हमारा।              | शब्द तेग इह गहि के, उतरे भव जल पार॥                       | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|       |       | चौपाई   |   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | साधु महिमा इह शेष बखाना। औ महेश नारद मुनि जाना।१७४।       | साधु के महिमा वेद जो कहई। कहा व्यास सुखदेव सुख लहई।१७५।   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | जाति पाति किछुवो नहिं अहई। बड़ा सोई साहब गुण गहई।१७६।     | सुपच से कवन है नीचा। बाजा घन्ट सबसे भए ऊँचा।१७७।          | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | कृष्ण आपु प्रदक्षिण कीन्हा। धन धन साधु अमर पद चीन्हा।१७८। | साधु सोई जो दुर्मति खोवे। साच रहे अघ पातक धोवे।१७९।       | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | साधु सोई कमला जल माहीं। संग रहे जल परसत नाहीं।१८०।        | एहि विधि रहे फिरे संसारा। ज्ञान विचारि करे उपकारा।१८१।    | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | साधु दर्श पद पंकज गहई। महा पाप दुःख दारुण दहई।१८२।        | कोटि तीर्थ साधुन्ह के पासा। मंजन करे जाय यम त्रासा।१८३।   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|       |       | 9   |   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|---|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - १६   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कारज से कारण कठिन, गया जीव के साथ।<br>कारण ते रावण गए, बीस भुजा दस माथ॥ |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साधु से कारण कोई ना करई। महा पाप दुःख दारुण सहई।१८४।                    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | महा पाप यम शासन करई। एहि विधि जाये चौरासी परई।१८५।                      |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साधु सोई निर्मल गुण सारा। बारे दृष्टि करे उजियारा।१८६।                  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | ज्यों मराल मन कबहीं न मैला। मन और ज्ञान तोल महँ तौला।१८७।               |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कड़ी कमान घैचे दिन राती। तेहि नहिं काल करे उत्पाती।१८८।                 |       | सतनाम |       |
|       |       |       | ताके पास कामिनि नहिं जाई। मस्त हाल देखि दूरि पराई।१८९।                  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | भांग अफीम पान नहिं खाई। झैर अमी चाखो लव लाई।१९०।                        |       | सतनाम |       |
|       |       |       | एहि रहनि सुनो हो सन्ता। तेजहु मन मत भाव अनन्ता।१९१।                     |       |       |       |
| सतनाम |       |       | एक रस रहे एक गुण गावे। साधु लक्षण निजु प्रगटे तहाँ पावे।१९२।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | परिमल पारस वृक्ष है केता। जहां कुकाठ चन्दन भौ हेता।१९३।                 |       |       |       |
|       |       |       | साखी - २०   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | नाचे गावे ताल बजावे, धरे भर्भ का ओट।                                    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कहें दरिया नहिं पदहिं समाना, है हीरा पै खोट॥                            |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साधु मन्दिल गुण तीर्थ धामा। धूरि धूप करिये विश्राम।१९४।                 |       | सतनाम |       |
|       |       |       | साधु पारस इमि लोह पर छेनी। पद पंकज सुरसरि त्रिवेनी।१९५।                 |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साधु सरस गुण क्रोध संक्षेपा। पदुम प्रकाश वारि नहिं लेपा।१९६।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | साधु सुमति मति ज्ञान विरागा। मति मराल फिरि होहिं न कागा।१९७।            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | इमि करि साधु जगत में डोले। पूछे बिना किछ बात न बोले।१९८।                |       | सतनाम |       |
|       |       |       | भेष बनाये ब्याधा सर जोरा। भभूत भर्म है भीतर कठोरा।१९९।                  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कृषि कर्म काम नहिं सोधा। क्रोध हंकार लड़हिं बड़ योद्धा।२००।             |       | सतनाम |       |
|       |       |       | लेन देन करि मल कहँ खावे। भीतर हंकार धुआँ मुख आले।२०१।                   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | दिल का मुर्चा धोऊ अभागा। ज्ञान विराग सुमति में जागा।२०२।                |       | सतनाम |       |
|       |       |       | इमि करि साधु सरस गुण कहेऊ। लाख में एक कहन को भैऊ।२०३।                   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|---|-------|---|-------|-------|-------|
|       |   |       | साखी - २१   |       |       |       |
| सतनाम | कपट काटि काँटा कटेवो, काटु कुबुद्धि बन ठाट।                       | सतनाम | सतगुरु दोष न दीजिये, यम रोकेगा बाट॥                         | सतनाम |       |       |
|       |   |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम | खोट मोट बाट नहिं सूझेऊ। कपट काट भौ ऐसो अरुमैउ।२०४।                | सतनाम | होहु संत मत ज्ञान समोवै। कठिन काल पीछे जनि रोवै।२०५।        | सतनाम |       |       |
| सतनाम | निर्मल थीर भव महँगे मोला। थीर नीर नहिं अरध घट डोला।२०६।           | सतनाम | नीर सुखो सरवर दुरि डारा। तरुणा बिते भौ काम विकारा।२०७।      | सतनाम |       |       |
| सतनाम | भर्मत फिरे मर्म नहिं जाना। जरा मरन भौ आय नियराना।२०८।             | सतनाम | सुत बित नारि जो कहे हमारा। दया विवेक न करे विचारा।२०९।      | सतनाम |       |       |
| सतनाम | पल पल क्षण क्षण घटने लागा। ज्ञान विराग विवेक न जागा।२१०।          | सतनाम | एहि विधि केते गये यम द्वारा। सार शब्द सुनि लागु बेकारा।२११। | सतनाम |       |       |
| सतनाम | अवगुण सब विधि गुण कछु नाहीं। तरनी टूट परा भव माहीं।२१२।           | सतनाम | केवट अनारी खेवनि हारा। परा चकोह विविधि बहु धारा।२१३।        | सतनाम |       |       |
|       |   |       | साखी - २२   |       |       |       |
| सतनाम | झूठो मीठो लागई, साचो तीतो तात।                                    | सतनाम | थोरे पवन में डोलत है, ज्यों पीपर को पात॥                    | सतनाम |       |       |
|       |   |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम | दश मास नौ जमा बनैऊ। तीन सौ साठ चिराबन्द लैऊ।२१४।                  | सतनाम | ताहि ग्रीद एक मुकुट बनाया। दोय लाल तेहि बिच लगाया।२१५।      | सतनाम |       |       |
| सतनाम | नासा श्रवन दशन तहाँ शोभा। रसना षटरस बीजन लोभा।२१६।                | सतनाम | ताहि नीचे दुई भुजा बनाया। तामें कर दस सखा लगाया।२१७।        | सतनाम |       |       |
| सतनाम | जंघ युगल चरण चारु पाया। डोलत फिरत भवन में आया।२१८।                | सतनाम | बाल कुमार तरुण पन ऐऊ। झुठ साँच बहु बात बनैऊ।२१९।            | सतनाम |       |       |
| सतनाम | एहि विधि भै गर्व गुण गामी। बिसरि गया नहिं अमृत आमी।२२०।           | सतनाम | मन मत माति बके बहु बाता। साधु सन्त के निकट न जाता।२२१।      | सतनाम |       |       |
| सतनाम | निन्दहिं साधु फिरि यम ने बाँधा। बहु विधि बन्धन ताहि धरि साधा।२२२। | सतनाम | बिसरि गयो जगदीश गोंसाई। नख सिख जिन्हि फल सभ लाई।२२३।        | सतनाम |       |       |
| सतनाम |   |       | 11  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी- २३   |       |       |       |
|       |       |       | बिसरि गया चित चातुरी, मीत बिसारेवो जानि।                         |       |       |       |
|       |       |       | यहाँ स्नेह लगाइया, यमपुर होइहें हानि॥                            |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | कटि पटुका भाँवर दुई दीन्हा। बाँधि पींजरे मैना तब कीन्हा।२२४।     | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | काँध कँधावरि हरदी वोरी। शोभे लीलाट चन्दन की खोरी।२२५।            | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | नैनन्हि काजर कारिख कीन्हा। भये मगन सब मन नहिं चीन्हा।२२६।        | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | योग किया सिर सेहरा साधा। करि प्रपंच कंगन बहु बाँधा।२२७।          | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | लीन्ह लिवाय मन्दिर के गेऊ। आनन्द मंगल सब मिलि गैऊ।२२८।           | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | टेढ़ी चाल औ बैन अवेढ़ा। सासु ननदि संग कीन्ह बखेढ़ा।२२९।          | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | लगी पढ़ावन सुनु पिया मोरा। हमरी बचन करहु जनि भोरा।२३०।           | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | गुरु होय सिख सिखावनि लागी। अति करि प्रेम काम रस पागी।२३१।        | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | माते बहु विधि सब अनहीता। मातु बचन सब लागे तीता।२३२।              | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | अवगुण गुण नहिं करे विचारा। बिनु गुण ज्ञान बुड़ा मझधारा।२३३।      | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | जो मम कहेवो बिरला केहु कियेऊ। बिनु गुण ज्ञान केवट किमि लहेऊ।२३४। | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|       |       |       | साखी - २४  |       |       |       |
|       |       |       | दया धर्म विवेक नहिं, कौल किया सब भोर।                            |       |       |       |
|       |       |       | मातु पिता नहिं गुरु आज्ञा, बाँधि गये जिमि चोर॥                   |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | कनक बेरि सब नृप पगु डारी। मोतिन्ह माँग गूँथी बहु विधि नारी।२३५।  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | बाँधे मुये बधुआ नहिं जाना। हाड़ चाम सब खाक उड़ाना।२३६।           | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | छूटा गज बाज सब साथी। यम ने पकड़ि नाक धरि नाथी।२३७।               | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | साधु असाधु यह करो विचारा। जैसन कर्म तहाँ ले डारा।२३८।            | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | लोह की बेरी सभो पगु डारी। जैसन धन तैसन दीन्हो नारी।२३९।          | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | बाजीगर ज्यों बाँधु बनाई। नाचहिं मर्कट द्वारे जाई।२४०।            | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | ज्ञान होय तब करे विचारा। बिनु गुण ज्ञान बूड़ा मझधारा।२४१।        | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | उलटा बेरि नारी पगु डारी। बाँधे रहो करौ रखवारी।२४२।               | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | रंग महल मानो पिंजरा भैऊ। मुनिअन्हि पकरि ताहि मह लैऊ।२४३।         | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | लाल निकाल बाहर करि लीन्हा। फद फद करे रात और दीना।२४४।            | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | छूटा बन्धन साधु जब भयऊ। उछलित प्रेम मगन मन रहेऊ।२४५।             | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|       |       |       | 12   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|---|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - २५   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जैसे लता द्रुम में, अरुझि रहा फूल पात।<br>एहि विधि माया जगत् में, कैद किया गुण गात॥ |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | कामिनि कनक लता लपटाना। अरुझत सझुरही सन्त सुजाना।२४६।                                |       | सतनाम |       |
|       |       |       | ज्यों महि मण्डल परै भुलाई। निकलि जाय ज्यों फनि मनि पाई।२४७।                         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | उपजि मणि भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४८।                               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | पाया डगर जो डगमग नाहीं। चढ़ि गौ गगन डोरि ताहा जाहीं।२४९।                            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | चली सुरति निरति रहु नीचे। सार भाग पद नहिं तहाँ मीचे।२५०।                            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | नीच ऊँच पद पावहिं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१।                              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साधु के महिमा कहि नहिं जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२।                           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | जैसे रवि शशि सब ते ऊँचा। अवरि जीव जगत् सब नीचा।२५३।                                 |       |       |       |
| सतनाम |       |       | थाके निगम साधु गुण गाई। शेष सहर्स मुख चरित्र सुनाई।२५४।                             |       | सतनाम |       |
|       |       |       | आदि अन्त थाके मुनि केता। साधु के महिमा है सिन्धु समेता।२५५।                         |       |       |       |
|       |       |       | साखी - २६   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस।<br>साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश॥           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६।                               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | शक्ति संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७।                            |       |       |       |
| सतनाम |       |       | उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भक्ति प्यारा।२५८।                           |       | सतनाम |       |
|       |       |       | माया भक्ति बरोबरि जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५९।                             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जनि मानी।२६०।                                   |       | सतनाम |       |
|       |       |       | अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा नहिं कोई।२६१।                              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२।                               |       | सतनाम |       |
|       |       |       | सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनदि दोनहु कहँ मूला।२६३।                              |       |       |       |
| सतनाम |       |       | प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४।                                   |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।                             |       |       |       |
|       |       |       | 13  |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|---|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - २६   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | इह एके मन एके दशा, एके शब्द है सार।<br>कहें दरिया मम भाखिया, गुण गहि होखे पार॥  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अवतार हमार साँच यह जानों। एहि बात दोविधा मति जनि मानो।२६६।<br>हद बेहद से आगे अहई। सो साहब गुण इहवाँ कहई।२६७।<br>साच कहों लिखि कागज कोरे। सो साहब आये गृह मोरे।२६८।  |       | सतनाम |       |
| सतनाम |       |       | अगम निगम सब कहि समुझाई। वेवाहा बेकीमति दिखाई।२६९।<br>तन्तागिर जग अदब देखाया। सो साहब इहा हद पर आया।२७०।<br>अकूफ करे मुक्ति फल पावे। चौरासी कबहीं नहिं जावे।२७१।   |       | सतनाम |       |
| सतनाम |       |       | अन्न कपड़ा सब उनके हाथा। ज्ञान सन्ते से होय सनाथा।२७२।<br>शहजादा यह अहे हमारा। मनसफ दीया कहा टकसारा।२७३।<br>यह दो फरजन्द जो अहे हमारा। इनके दीन्ह छापा टकसारा।२७४।  |       | सतनाम |       |
| सतनाम |       |       | दफा हमार समुझि गुण गइहो। वेवाहा दरिया चित लइहो।२७५।   |       | सतनाम |       |
|       |       |       | साखी - २८   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | सिरे दफा इन्हें जानिये, अदब आदाब सिर नाय।<br>दाफा हमार यह जानिए, अकूफ कहा समुझाय॥   |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चौपाई   |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साहब जब छपलोक बतैऊ। कोर्निस करि अर्ज मम लयऊ।२७६।<br>यह अन्नवाँ वहाँ है की नाहीं। सोई बचन कहिये मम पाहीं।२७७।<br>यह अन्नवाँ वहाँ कबहिं न होखे। बहुत मीठा अमृत रस पोखे।२७८।   |       | सतनाम |       |
| सतनाम |       |       | अमर फूल और अमर दोलइचा। फिरि नहिं उलटि फिरि नहिं घैचा।२७९।<br>पलंगे पुहुप छत्र सिर छाजे। सही विधि हंस बहुत सुख राजे।२८०।<br>बहुत बुलन्द मृत्युलोक बशाया। मन रंझे सबे अरुझाया।२८१।  |       | सतनाम |       |
| सतनाम |       |       | हदहिं पर छपलोक जो कहई। हद से वाएब वोह वाये नहिं अहई।२८२।<br>उत्तर दिशा है शहर हमारा। अमर लोक तहँ हंस करारा।२८३।<br>मैंने कहा कही तुम्हें दीजै। निश्चय रहे प्रेम नहिं छीजै।२८४।<br>कुदरती मेवा उहँवाँ पाई। युग युग के सब क्षुधा बुताई।२८५। |       | सतनाम |       |
| सतनाम |       |       |   |       | सतनाम |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - १६  |       |       |       |
|       |       |       | उत्तर दिशा पांजी अहै, पल पल करे जनि भोर।                     |       |       |       |
|       |       |       | तहाँ के हंस गमन करे, कहा जो माने मोर॥                        |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
|       |       |       | साहब कहेवो गुप्त करि राखा। सो मम भेद प्रकट यह भाखा।२८६।      |       |       |       |
|       |       |       | खाक बाव आब आतश लाया। सिकम माए को मरकाव बनाया।२८७।            |       |       |       |
|       |       |       | शीन साफ मुख नूर विराजे। शोभा सुन्दर बहु विधि छाजे।२८८।       |       |       |       |
|       |       |       | गिर्द महल चहुँ दिशि बनाया। बीच बीच कनक चित्र लिखाया।२८९।     |       |       |       |
|       |       |       | तख्त बनाय खड़ा तहाँ किया। हीरा जवाहिर ता बीच दिया।२९०।       |       |       |       |
|       |       |       | कहि न जात तख्त का शोभा। बैठा तापर मन इमि लोभा।२९१।           |       |       |       |
|       |       |       | आम खास खुशबोई केता। मोती झालरी झनकै सेता।२९२।                |       |       |       |
|       |       |       | कंचन पलंग तहां लै डारा। हीरा मानीक है उजियारा।२९३।           |       |       |       |
|       |       |       | बेगम औ सहेलियां केता। कोर्निस करहिं प्रेम निजु हेता।२९४।     |       |       |       |
|       |       |       | खोज खवास चँवर सिर डारा। अत्र चिराग किन्ह उजियारा।२९५।        |       |       |       |
|       |       |       | अठारह लाख फौज है एता। तुर्की ताजी पायल केता।२९६।             |       |       |       |
|       |       |       | तब मम देखा दृष्टि पसारी। इनके किमि करि लेऊँ निकारी।२९७।      |       |       |       |
|       |       |       | साखी - ३०  |       |       |       |
|       |       |       | सिरे दफा सुल्तान मम, अब किछु करों उपाय।                      |       |       |       |
|       |       |       | इनके लेई निकालेऊँ, सिफ्त मेरो गुन गाय॥                       |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
|       |       |       | किन्ह निमेरा दिन बहु बीता। जिन्दा जागृत रहे हंस के हीता।२९८। |       |       |       |
|       |       |       | अबदुलह खाँव रुजू तब भयऊ। फौज निकाल बाहर तब कियेऊ।२९९।        |       |       |       |
|       |       |       | कुदरति आय परा मैदाना। नौबत बहु विधि हना निशाना।३००।          |       |       |       |
|       |       |       | तलाब ऊपर मम बैठा जाई। दर्शन करहिं लोग सब आई।३०१।             |       |       |       |
|       |       |       | वजीर से सब मिलि बात जनाया। एक फकीर बेकीमति जो आया।३०२।       |       |       |       |
|       |       |       | झलके दीदम शोभा बहु भाँती। बरखत नूर कोई अहे अजाती।३०३।        |       |       |       |
|       |       |       | वजीर कहा बादशाह से जाई। फकर बड़ा फकीर कोई आई।३०४।            |       |       |       |
|       |       |       | सिफ्त बहुत जो हमें सुनाया। मम वजीर तुम्हें खबरि जनाया।३०५।   |       |       |       |
|       |       |       | फकीर दो चन्द तुमसे जो अहई। दर्शन कीजे भला सब कहई।३०६।        |       |       |       |
|       |       |       | उन्हके दोय सब नीका। और खालक जानो सब फीका।३०७।                |       |       |       |
|       |       |       | 15   |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |

| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |
|-------|-------|-------|--|-------|-------|-------|
|       |       |       | साखी - ३१  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तख्त तरवा पर बैठि के, पहुँचे उहवाँ जाय।                    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | संग वजीर हाजिर है, सिफ्त किन्ह बनाय॥                       |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तख्त तरवा से नीचे हुजिये। करि सलाम अदब सो रहिये।३०८।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | चहुँ दिशि गिलम दिया बिछाई। करि सलाम तब बैठा आई।३०९।        |       |       |       |
| सतनाम |       |       | नूर सो दीदम गया छपाई। बहुत अदब उन्हें के दिल आई।३१०।       |       | सतनाम |       |
|       |       |       | पूछन लागा कहाँ ते आई। इसम कहों कवन समुझाई।३११।             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | एक बहिश्त है सबते न्यारा। वेवहा कहो नाम हमारा।३१२।         |       | सतनाम |       |
|       |       |       | वाहि शहर से हम चलि आई। यह सब कुदरति मेरी बनाई।३१३।         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | सुल्तान के दिल में खतरा ऐऊ। सतपुरुष खोदाये के कहेऊ।३१४।    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | सलाम करि उठा तब आई। तख्त तरवा पर बैठा जाई।३१५।             |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तम्बु के बीच में पहुँचा आई। कोर्निस सब मिलि किया बजाई।३१६। |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कड़ी नजर वजीर पर भैऊ। हमके लेई उहा तुम गयेऊ।३१७।           |       |       |       |
| सतनाम |       |       | वेवाहा के केहु ना देखेऊ। मर्कब बनाये दृष्टि में पेखेऊ।३१८। |       | सतनाम |       |
|       |       |       | कोर्निस बजाये वजीर इमि कहेऊ। फकर खोदाय दुजा नहिं अहेऊ।३१९। |       |       |       |
|       |       |       | साखी - ३२  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | तब सुल्तान ठन्डा भये, अब कछु कहा न जाय।                    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | यह कुदरति मम देखिया, फिर पीछे पछताय॥                       |       |       |       |
|       |       |       | चौपाई  |       |       |       |
| सतनाम |       |       | साहब आपु निमेरा गयऊ। फिरि पीछे यह खोजत भयऊ।३२०।            |       | सतनाम |       |
|       |       |       | वह तब उहवाँ नाहीं अहेऊ। का जानी जो कहवाँ गयेऊ।३२१।         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | खोजे सब मिलि फौज में जाई। उदास भया दिल कछु न सोहाई।३२२।    |       | सतनाम |       |
|       |       |       | खोजी हेरि सब जामा भयऊ। वह कुदरति कतहिं नही पयऊ।३२३।        |       |       |       |
| सतनाम |       |       | अबदुल्लह खाँव अर्ज तब कियऊ। साहब आपु अगम कहँ गयेऊ।३२४।     |       | सतनाम |       |
|       |       |       | इनके अब हम लेव निकारी। देई अकूफ फौज दूरि डारी।३२५।         |       |       |       |
| सतनाम |       |       | सुल्तानहिं फिकिरि जिकिरि यह भयऊ। वेवाहा वह कहवाँ गयऊ।३२६।  |       | सतनाम |       |
|       |       |       | काम न आवे फौज जहाना। तर्क किया तब सिफ्त बखाना।३२७।         |       |       |       |
| सतनाम | सतनाम | सतनाम | सतनाम  | सतनाम | सतनाम | सतनाम |



| सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम  | सतनाम |
|-------|---|-------|---|-------|--|-------|
| सतनाम | छोड़ा तख्त बेगम सब झारी। हाय हाय सब करे पुकारी।३२८।         | सतनाम | निकलि गये केहु अन्त न पयऊ। यह कुदरति कछु कहत न अयऊ।३२९।     | सतनाम | साखी - ३३  | सतनाम |
| सतनाम | धन्य धन्य सब कहत है, सिपित कहा नहिं जाय।                    | सतनाम | तर्क किया सुल्तान ने, वा कुदरति सभ पाय।।                    | सतनाम | चौपाई  | सतनाम |
| सतनाम | एक हंस दोई देह विराजे। छत्र हमार दोनों सिर छाजे।३३०।        | सतनाम | संसय तुम्हारी दिया मिटाई। शहजादा सुनो चित्त लाई।३३१।        | सतनाम | दीन का तख्त तुम्हें यह दीन्हा। तुम अपने दिल खुश कै लिन्हा।३३२। | सतनाम |
| सतनाम | करो अदल अदब जग फेरा। वेवाहा निजु नाम है मेरा।३३३।           | सतनाम | एही सिपित सदा गुन गइहो। हमको दोड़ि पिछे पछतइहो।३३४।         | सतनाम | जो कोई दफा तुम्हारा अहई। तुम सो प्रेम सदा गुन गहई।३३५।         | सतनाम |
| सतनाम | सुरति डोरि चित चेतनि अहई। छापा सनदि मूल सो गहई।३३६।         | सतनाम | सहज योग भोग कहँ त्यागे। सुक्ष्म इन्द्री ज्ञान में जागे।३३७। | सतनाम | उज्जवल दशा हंस तब भयऊ। मंजन मैल धोखा सब गयऊ।३३८।               | सतनाम |
| सतनाम | विमल पुनीत प्रेम रस पीवे। छपलोक में युग युग जीवे।३३९।       | सतनाम | साखी - ३४   | सतनाम | आवागमन नेवारी के, छपलोक में जाय।                               | सतनाम |
| सतनाम | भव भागर नहिं देखिए, एहि विधि कहा बुझाए।।                    | सतनाम | चौपाई   | सतनाम | यह धोखा जनि जाने कोई। बचन हमार दुजा नहिं होई।३४०।              | सतनाम |
| सतनाम | बिनु देखो कथे बहु बानी। भेष अलेखा लेहु पहचानी।३४१।          | सतनाम | तुम्हार कहा माने जब दासा। निश्चय है छपलोकहि बासा।३४२।       | सतनाम | साखी शब्द सीखा भुलवावे। यम दारुण तेहि दाव लगावे।३४३।           | सतनाम |
| सतनाम | है छपलोक साच मम कहेऊ। यह झूठ जाने काल बसी भेयऊ।३४४।         | सतनाम | छापा सनदि मूल है ज्ञाना। यह झरि देखाहिं सन्त सुजाना।३४५।    | सतनाम | सोवत जागत ना बिसरावे। सदा प्रेम अमृत फल पावे।३४६।              | सतनाम |
| सतनाम | मैं हो वह जागृत जीन्द स्वरूपा। तुम्ह से कहेऊ बचन अनूपा।३४७। | सतनाम | तुम्हरी बचन कहा जो माने। है छपलोक छापा पहचाने।३४८।          | सतनाम |  | सतनाम |
| सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम   | सतनाम | सतनाम  | सतनाम |

| सतनाम     | सतनाम      | सतनाम  | सतनाम   | सतनाम   | सतनाम       | सतनाम                              |
|-----------|------------|--------|---------|---------|-------------|------------------------------------|
| हंस       | दशा        | प्रेम  | लव      | लावै ।  | मानसरोवर    | मोती पावै ।३४६।                    |
| साखी - ३५ |            |        |         |         |             |                                    |
| तुम्ह     | शहजादा     | मम     | हों,    | ज्ञान   | जो कहा      | विचारि                             |
| जो        | निश्चय     | कै     | जानहिं, | भव      | जल          | जाहिं न हारि॥                      |
| चौपाई     |            |        |         |         |             |                                    |
| जंगली     | फूल        | है     | बहु     | विधि    | भाँती।      | तामें भँवर रहा मद माती।३५०।        |
| वाके      | छोड़ि      | कतहिं  | नहीं    | जावे।   | बाही        | फूल में जन्म गँवावे।३५१।           |
| अनन्त     | फूल        | फूला   | सब      | झारी।   | बिनु        | सींचे सब लता पसारी।३५२।            |
| पदुम      | प्रकाश     | बिरला  | केहु    | देखा।   | अविगति      | कही अजर के रेखा।३५३।               |
| ऐसे       | फूल        | है     | सब      | नर      | नारी।       | भक्ति बिसारि बन्धन ग्रीव डारी।३५४। |
| साहब      | छोड़ावे    | तब     | यह      | छूटे।   | नहीं तो     | काल सकल जीव लूटे।३५५।              |
| मारे      | जारे       | देई    | अवतारा। | मन      | के जाल      | बन्धन बहु डारा।३५६।                |
| जैसे      | मरकट       | बाँधि  | नचावे।  | घर      | घर          | काल तमाशा लावै।३५७।                |
| काहें     | बिसारहु    | फूल    | अनूपा।  | एहि     | विधि        | अरुझे बड़ बड़ भूपा।३५८।            |
| वोय       | फूल        | सुवैन  | मरि     | न       | जावे।       | सदा सजीवन सो गुण गावे।३५९।         |
| अजर       | अमान       | जरे    | नहिं    | कबहीं।  | वोय         | सतवर्ग सदा गुण अहहीं।३६०।          |
| साखी - ३६ |            |        |         |         |             |                                    |
| वोय       | सतवर्ग     | सर्व   | ऊपरे,   | जिन्दा  | अजर         | अमान।                              |
| जीव       | मुक्तावहीं | जगत्   | में,    | हमके    | बना         | वेवान॥                             |
| चौपाई     |            |        |         |         |             |                                    |
| फूल       | गुलाब      | है     | बहु     | किवधि   | नीका।       | अत्र हुआ महंगे मोल बीका।३६१।       |
| वाकी      | नजरि       | बहुत   | सोहाई।  | शीतल    | चन्दन       | चरचि चढ़ाई।३६२।                    |
| ज्ञान     | विचारि     | भया    | निजु    | दासा।   | सो          | गुलाब सतगुरु के पासा।३६३।          |
| द्वाल     | बन्द       | सिपाही | अहई।    | शब्द    | सांगि       | यह निशि दिन गहई।३६४।               |
| खुशहाल    | दास        | फकीर   | है      | नीका।   | रूखा        | सूखा नहिं जानत फीका।३६५।           |
| अन्न      | कपड़ा      | कबहिं  | नहिं    | जोवे।   | प्रेमप्रीति | दुर्मति कहँ खोवे।३६६।              |
| मुरली     | दास        | दिवान  | करि     | लीन्हा। | जो          | गुण रहा सो प्रगट कीन्हा।३६७।       |
| जग        | में        | जाये   | अकूफ    | चलावे।  | बहियाँ      | होय के आनि मिलावे।३६८।             |
| इमि       | करि        | भै     | गौ।     | मुरली   | दासा।       | यहि विधि आनन्द प्रेम सुवासा।३६९।   |
| 18        |            |        |         |         |             |                                    |
| सतनाम     | सतनाम      | सतनाम  | सतनाम   | सतनाम   | सतनाम       | सतनाम                              |

| सतनाम     | सतनाम    | सतनाम  | सतनाम   | सतनाम     | सतनाम | सतनाम                            |
|-----------|----------|--------|---------|-----------|-------|----------------------------------|
| शहजादा    | दोये     | हमरे   | पासा।   | शाह       | फकर   | औ बस्ति दासा।३७०।                |
| साखी - ३७ |          |        |         |           |       |                                  |
| शहजादा    | मम       | दोये   | हैं,    | मनसफदार   | हमार। |                                  |
| सदा       | अदब      | सिर    | राखिये, | ऐसी       | भक्ति | करार॥                            |
| चौपाई     |          |        |         |           |       |                                  |
| मेहरबान   | दास      | मम     | बालक    | अहई।      | मातु  | के संग सदा वोय रहई।३७१।          |
| बाल       | कुमाल    | तरुण   | पन      | भैऊ।      | हुआ   | फकीर सैल कह गैअऊ।३७२।            |
| करे       | सैल      | फेरि   | थै      | पर        | आवे।  | मातु के संग सदा गुण गावे।३७३।    |
| जाके      | ज्ञान    | हो     | भरि     | पूरा।     | सोई   | जन जगत् महुँ सूरा।३७४।           |
| बिना      | ज्ञान    | गमि    | कहाँ    | सो        | पावे। | ज्ञान विचारि अमरपुर जावे।३७५।    |
| अमरपुर    | झरि      | बहुत   | सोहाई।  | एहि       | विधि  | प्रेम मगन होय जाई।३७६।           |
| अहे       | साँच     | झूठ    | जनि     | जाने।     | सो    | छपलोक पयाना ठाने।३७७।            |
| सिरे      | जामा     | सि     | खुला    | अहई।      | ज्ञान | गमी छापा निजु गहई।३७८।           |
| सनदि      | हमार     | करे    | पहचानी। | झूठ       | तेजि  | अमृत रस सानी।३७९।                |
| किमि      | करि      | कहों   | विविधि  | विस्तारी। | सभकी  | सनदि हजुरे डारी।३८०।             |
| जो        | जन       | दफा    | हमारा   | अहई।      | सब    | सेवक साहब का कहई।३८१।            |
| भूखे      | भक्ति    | ज्ञान  | नहिं    | आवे।      | आतम   | मरि विकल होय जावे।३८२।           |
| साखी - ३८ |          |        |         |           |       |                                  |
| एहि       | अर्ज     | सुन    | लीजिये, | कोर्निस   | करि   | सिर नाय॥                         |
| अन्न      | कपड़ा    | कह     | दीजिए,  | इमि       | तेरो  | गुण गाय॥                         |
| चौपाई     |          |        |         |           |       |                                  |
| सोई       | सोहागिनी | पिया   | रंग     | राती।     | सोई   | सोहागिनि कुल नहिं जाती।३८३।      |
| सोई       | सोहागिनि | पिया   | पहचाने। | तन        | मन    | वारि भक्ति निजु ठाने।३८४।        |
| कपड़ा     | श्वेत    | सुगन्ध | सोहाई।  | लाल       | पियर  | के नगीच न जाई।३८५।               |
| भई        | युगल     | इमि    | पिया    | के        | साथा। | आनन्द मंगल सदा सनाथा।३८६।        |
| सोहागिन   | सो       | पिया   | हुकुम   | जोगावे।   | निशा  | दिन सेवा खशम के लावे।३८७।        |
| अभरण      | दूरि     | करि    | काँच    | की        | पोती। | सब सखियन महुँ निर्मल ज्योति।३८८। |
| पिया      | के       | चरण    | सदा     | इमि       | लोचे। | रहे सनीप अघ पातक मोचे।३८९।       |
| शाहजादि   | है       | अजदा   | मेरी।   | मेहर      | कीजै  | कहा करि जोरी।३९०।                |
| 19        |          |        |         |           |       |                                  |
| सतनाम     | सतनाम    | सतनाम  | सतनाम   | सतनाम     | सतनाम | सतनाम                            |

| सतनाम   | सतनाम | सतनाम   | सतनाम   | सतनाम     | सतनाम     | सतनाम        |
|---------|-------|---------|---------|-----------|-----------|--------------|
| नाम     | दुलह  | है      | बहुत    | दुलारी।   | दया       | करो          |
| दुःख    | मेटहु | तुम     | सुख     | के        | दाता।     | जाते         |
| गरीब    | नेवाज | है      | नाम     | तुम्हारा। | दया       | करो          |
|         |       |         |         |           | भव        | सिन्धु       |
|         |       |         |         |           | के        | पारा।३६३।    |
|         |       |         |         |           | साखी - ३६ |              |
|         |       |         |         |           | सोई       | सोहागिन      |
|         |       |         |         |           | प्रेम     | रस,          |
|         |       |         |         |           | करे       | पिया         |
|         |       |         |         |           | से        | नेह।         |
|         |       |         |         |           | आगत       | सोच          |
|         |       |         |         |           | विचारहु,  | नहिं         |
|         |       |         |         |           | तो        | मुए          |
|         |       |         |         |           | या        | तन           |
|         |       |         |         |           | खेह॥      |              |
|         |       |         |         |           | चौपाई     |              |
| राय     | मती   | कुल     | सब      | कहँ       | त्यागी।   | भक्ति        |
|         |       |         |         |           | विचारि    | ज्ञान        |
|         |       |         |         |           | में       | जागी।३६४।    |
| त्यागा  | कुल   | कुटुम्ब | सब      | जाती।     | सतगुरु    | चरण          |
|         |       |         |         |           | प्रेम     | रस           |
|         |       |         |         |           | माती।३६५। |              |
| हुकुँम  | हमार  | सदा     | जोगावे। | बिना      | हुकुँम    | कतहीं        |
|         |       |         |         |           | नहिं      | जावे।३६६।    |
| ध्यान   | हमार  | सदा     | यह      | जोहे।     | ऐसी       | भक्ति        |
|         |       |         |         |           | प्रेम     | रस           |
|         |       |         |         |           | सोहे।३६७। |              |
| सो      | कुल   | आगर     | कुन     | में       | नीका।     | गयो          |
|         |       |         |         |           | बिहाय     | अवरि         |
|         |       |         |         |           | सब        | फीका।३६८।    |
| शाह     | फकर   | की      | दासी    | अहई।      | पतिव्रता  | वोये         |
|         |       |         |         |           | निसदिन    | गहई।३६९।     |
| अपने    | पीया  | के      | हुकुम   | जोगावै।   | अवरि      | बात          |
|         |       |         |         |           | कछुवौ     | नहीं         |
|         |       |         |         |           | भावै॥४००। |              |
| यहि     | भक्ति | वोए     | निजु    | करि       | जाना।     | अपने         |
|         |       |         |         |           | चित       | में          |
|         |       |         |         |           | कीन्ह     | मन           |
|         |       |         |         |           | माना।४०१। |              |
| अपने    | हजूर  | थै      | थपना    | कीन्हा।   | वचन       | हमार         |
|         |       |         |         |           | होय       | नहिं         |
|         |       |         |         |           | भीना।४०२। |              |
| जो      | हम    | कहा     | लिखा    | इन्ह      | दासा।     | बस्ति        |
|         |       |         |         |           | नाम       | है           |
|         |       |         |         |           | गुण       | प्रकाशा।४०३। |
| जो      | हम    | कहा     | लिखा    | गुण       | ज्ञाता।   | आखर          |
|         |       |         |         |           | युगल      | प्रेम        |
|         |       |         |         |           | रस        | राता।४०४।    |
| शाहजादा | कहँ   | बखशिश   | भैऊ।    | दोनों     | जने       | मिलि         |
|         |       |         |         |           | ज्ञान     | गुण          |
|         |       |         |         |           | गैऊ।४०५।  |              |
| दअल     | हमार  | अकूफ    | है      | नीका।     | सक्ति     | के           |
|         |       |         |         |           | संग       | रंग          |
|         |       |         |         |           | जानु      | फीका।४०६।    |
|         |       |         |         |           | साखी - ४० |              |
|         |       |         |         |           | थोरी      | उमरि         |
|         |       |         |         |           | तर्क      | किया,        |
|         |       |         |         |           | साहब      | निबाहहिं     |
|         |       |         |         |           | ओर।       |              |
|         |       |         |         |           | दोय       | फरजन्द       |
|         |       |         |         |           | साहब      | के           |
|         |       |         |         |           | आगे,      | कबहिं        |
|         |       |         |         |           | न         | करिये        |
|         |       |         |         |           | भोर॥      |              |
|         |       |         |         |           | साखी - ४१ |              |
|         |       |         |         |           | ज्ञान     | सम्पूर्ण     |
|         |       |         |         |           | प्रेम     | रस,          |
|         |       |         |         |           | देखत      | अर्ध         |
|         |       |         |         |           | अमान।     |              |
|         |       |         |         |           | मति       | मराल         |
|         |       |         |         |           | सुगन्ध    | अंग,         |
|         |       |         |         |           | इमि       | पै           |
|         |       |         |         |           | करत       | न            |
|         |       |         |         |           | पान॥      |              |
|         |       |         |         |           | चौपाई     |              |
| जल      | है    | ज्ञान   | बुद्धि  | है        | माया।     | इमि          |
|         |       |         |         |           | है        | क्षीर        |
|         |       |         |         |           | धर्म      | है           |
|         |       |         |         |           | दाया।४०७। |              |
| नीर     | क्षीर | संसृत   | सब      | अहई।      | जल        | के           |
|         |       |         |         |           | घौंचि     | क्षीर        |
|         |       |         |         |           | नहिं      | लहई।४०८।     |
| सोई     | हंस   | कुल     | वंश     | कहावे।    | नीर       | क्षीर        |
|         |       |         |         |           | इमि       | विवरण        |
|         |       |         |         |           | लावे।४०९। |              |

